कम से कम एक व्यक्ति के साथ बंधकर उनका जीवन रोग-ग्रस्त तो नहीं होगा।"[12] किन्नर कथा के लेखक महेन्द्र भीष्म ने ऐसे तृतीयलिंगियों का वैश्यावृत्ति कार्य करते हुए चित्रण किया है जो नकली हैं और गरीबी और भुखमरी के चलते इस कार्य को करने के लिए मजबूर हैं। कलेक्टर आयुष और पुलिस अधीक्षक निखिल ने जब इन नकली तृतीयलिंगियों को ट्रक ड्राइवरों के साथ वैश्यावृत्ति के लिए सौदा करते हुए पकड़ा और पूछताछ शुरू की तो ड़र के मारे इन नकली तृतीयलिंगियों ने सारा सच तुरंत ही उगल दिया और अपनी गरीबी और कहीं काम न मिलने की लाचारी वाली बात भी बतायी। जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार किया गया है- ***"जी हुजूर मैं रहमान हूँ, गांव में स्वांग मंडली के साथ नाचने-गाने का काम करता हूँ, दो रोज पहले अब्दुल भाई मुझे छतरपुर लेकर आये थे। मेरे बाप ने गरीबी से तंग आकर खुदकुशी कर ली थी हुजूर! तीन छोटी बहनें हैं, बूढ़ी माँ है हुजूर, गांव में कोई काम मांगने पर कोई काम नहीं देता। स्वांग वाला, खसुआ, जनखा, हिजड़ा कहकर टरका दिया जाता है। ताने मारते और हँसते-छेड़ते हैं मुझे। छह दिन से घर में चूल्हा नहीं जला। हुजूर! भूखों मरने की नौबत आ गयी है। मांग-मूंग कर दूसरों की दया पर जी रहे हैं हुजूर! भला हो अब्दुल भाई का। उन्होंने लंबू हिजड़े से मिलवा दिया। दो दिन में तीन सौ कमा लिए हुजूर। सोचा था कल सुबह गांव चला जाऊंगा। माँ और बहनों को खिलाकर ही कुछ खाने की कसम खाई थी हुजूर, सच कह रहा हूँ, खुदा कसम।"***[13]

सर्वविदित है कि भारत सरकार द्वारा **"ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019"** लागू किया गया, जिसका उद्देश्य इस समुदाय के अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें सामाजिक न्याय प्रदान करना है और कई राज्य सरकारें भी किन्नरों के लिए आरक्षण, रोजगार प्रशिक्षण, एवं स्वास्थ्य सेवाओं की योजनाएँ चला रही हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा जागरूक नागरिकों द्वारा भी इस समुदाय को मुख्यधारा में लाने के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। किन्तु आज भी किन्नर समुदाय को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं है। इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, एवं नौकरी के अवसरों से प्रायः वंचित रखा जाता है। अधिकांश किन्नर मजबूरीवश भीख माँगने, बधाई देने या यौन व्यापार जैसे कार्यों में संलग्न होते हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग इन्हें हेय दृष्टि से देखता है, जिससे इनकी आत्म-गरिमा और सम्मान को ठेस पहुँचती है। इसलिए यह सहर्ष स्वीकार करना होगा कि किन्नर समुदाय भी हमारे समाज का अभिन्न अंग है। उन्हें तिरस्कार नहीं, सम्मान की आवश्यकता है। जब तक हम अपनी सोच में परिवर्तन नहीं लाएँगे, तब तक कोई भी विधिक प्रावधान उन्हें वास्तविक गरिमा प्रदान नहीं कर सकेगा। प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार, सम्मान और अवसर मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी लिंग से संबंधित क्यों न हो। समाज तभी पूर्ण होगा जब उसमें हर वर्ग को समुचित स्थान मिलेगा और यही एक समावेशी और न्यायपूर्ण भारत की पहचान होगी।

****

सन्दर्भ सूची:-

1. गुलाम मंडी, पृ. – 71
2. यमदीप पृ. – 94
3. मैं क्यों नहीं, पृ. – 87
4. तीसरी ताली, पृ.- 14
5. वही, पृ.- 170
6. वही, पृ.- 11
7. दरमियाना पृ.- 14
8. वही, पृ.- 65
9. जिन्दगी 50-50, पृ.- 139

नहर में बहती लाशें" में समाज की वर्गीय संरचना

उमा बणिचुल
शोधार्थी
हिंदी विभाग विश्वविद्यालय -हैदराबाद

साहित्य समाज का दर्पण होता है। अर्थात सामाजिक प्राणी मानव के जीवन से संबोधित समस्त विषय साहित्य में समाहित होते हैं। राजू शर्मा द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों से संबंध रखने वाले ग्रामीण व नगरीय परिवेश में रहकर जीवन यापन करने वाले मानव के जीवन के विविध रूपों को अपनी कथावस्तु का आधार बनाया।

लेखक राजू शर्मा द्वारा उच्च, मध्य व निम्न वर्गों में विभाजित भारतीय समाज को प्रमुख रूप से अपनी कृतियों का विषय बनाया।

समाज की वर्गीय संरचना:-व्यक्तियों का समूह ही समाज है। समाज से संबंध रखने वाले को सामाजिक कहा जाता है। सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत तीन वर्ग को देखने को मिलते हैं यथा- उच्च वर्ग, मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग।

उच्च वर्ग :- उच्च वर्ग को धानाढ्य वर्ग भी कह सकते हैं। इस वर्ग का उदय उद्योग विकास के साथ जुडा हुआ है। इस वर्ग का प्रभुत्व समाज की आर्थिक सत्ता पर निर्भर है। जमींदार, पूँजीपति, साहूकार, व्यापारी, उद्योगपति आदि इस वर्ग में आते हैं। शासन का संचालन इसी वर्ग द्वारा होता है। पूँजीपतियों द्वारा मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग का शोषण कर उच्च वर्ग का ताज पहना जाता है।

मध्य वर्ग :-उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच जो वर्ग आता है उसे मध्य वर्ग कहा जाता है। क्लर्क, सरकारी अफसर, वकील, डॉक्टर, छोटे व्यापारी आदि इस वर्ग में आते हैं। इस वर्ग के लोग उच्चाभिलाषी होते हैं। कम आय में बहुत कुछ करने का सपना देखते हैं, अतः उनका दैनिक जीवन अभिलाषाओं की पूर्ति करने के कारण कष्टमय होता है।

निम्न वर्ग:- निम्न वर्ग की आय कोई निश्चितता नहीं होती, ऐसे व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं। जैसे श्रमिक,मजदूर,कुली,नौकर,छोटे किसान,रिक्शावाला आदि। इस वर्ग की यह विशिष्टता है कि श्रम दान करके उच्च वर्ग की सेवा करना इनका प्रमुख कर्तव्य होता है। खुद को भूखा रखकर उच्च वर्ग को छप्पन भोग प्रधान करना तथा सड़क एवं झोपड़ी में जीवन यापन करते हुए उच्च वर्ग को आलीशान महल प्रदान करने इस वर्ग की पूरी जिंदगी लग जाती है।

राजू शर्मा के काहानी संग्रह 'नहर में बहती लाशें' में एक प्रमुख कहानी 'नहर में बहती लाशें' भी है। इस कहानी का मुख्य पात्र श्यामल है। जिसके माध्यम से कहानीकार ने मध्यवर्ग को प्रतिबिंबित किया है। श्यामल घोष पन्द्रह साल अमेरिका में रहा तत्पश्चात भारत लौटा। उसके पिताजी का नाम अरविन्द घोष एवं माताजी का नाम कमलनयनी घोष था। पिता के नहीं रहने के कारण माताजी के साथ बड़ौदा में रहता था। श्यामल घोष एक फोटो जर्नलिस्ट था इसलिए अपने घर की पहली मंजिल पर उसने स्टूडियो बना रखा था। एक दिन उसके हाथ एक मनोग्राफ लगा। मनोग्राफ का शीर्षक था- 'द मैजिक ऑफ भाखडा नांगल अ पर्सनल मेमुआर'। मनोग्राफ श्यामल के जेहन में निरन्तर दस्तक देता रहा। श्यामल का विचार भाखडा नांगल पर एक फोटो फीचर बनाने का था। जिसके विषय में कहा गया है- "श्यामल के मन में जिद पैदा की। उसकी योजना का आकार निरन्तर करवट लेता फोटो फीचर के साथ वृत्तचित्र क्यों नहीं? एक छोटी फिल्म भी हो सकती है। डिजिटल टेक्नोलॉजी में खर्चा बहुत नहीं है। पैसा जुटा सकता है।" इससे स्पष्ट होता है कि श्यामल घोष कुछ करना तो चाहता है परंतु पैसों की

कमी के कारण गंभीर सोच पड़ जाता है कि फोटो फिचर, वृत्तचित्र अथवा छोटी फिल्म बनाए की नहीं। आखिर क्या करें? फिर सोचता है कि जो कम खर्च में होगा उसको करेगा। उसके पास पैसा होता तो शायद अलग-अलग बना सकता था। इसी चीज को लेकर इतना गहन सोच विचार मध्य वर्ग की मनस्थिति को दर्शाता है।

कहानी संग्रह 'नहर में बहती लाशें' की अंतर्गत 'आई.टी.ओ. क्रॉसिंग' एक प्रमुख कहानी है इस कहानी में लोबन एक बाल एवं मुख्य पात्र है। इसके माध्यम से कहानीकार ने निम्न वर्ग के बाल चरित्र का चरित्र चित्रण किया है। लोबन पन्द्रह साल का एक बालक जो कि सहारनपुर जिले के एक गाँव में रहता था। जब उसके पिता-माता जीवित थे , उसका जीवन सरलता से गुजर रहा था। अभी पिता की मृत्यु को कुछ ही समय हुआ था की माता का भी देहांत हो गया। लोबन अब रिश्ते में मामा लगने वाले व्यक्ति के साथ रहने लगा। मामा अच्छा था या बुरा नहीं कहा जा सकता लेकिन लोबन मामा को पसंद नहीं करता था। अंतः एक दिन मौका देख कर लोबन मामा के घर से भाग कर दिल्ली चला गया। दिल्ली के फुटपाथ का टूटा-फूटा घर उसका घर बन गया। उसने धीरे-धीरे खतरों से आगे बढना और पनपना सीखा। वह काम की तलाश में इधर-उधर भटकने लगा। उसी समय बुद्धराम नाम के एक आदमी उसकी मुलाकात हुई। बुद्धराम उसे मैगजिन, पत्र-पत्रिका, किताब आदि घूमकर बेचने का काम देता। बुद्धराम का खुला घोषित ऑफर था कि कम से कम वह उसे दो रूपए देगा और दौ सौ से ऊपर विक्री होने पर कमिशन भी देगा। लोबन अपना व्यापार शूरू करना चाहता था परंतु उसके पास पूँजी नहीं थी। वह सोचता- "अगर किसी तरह उसके पास शुरूआत करने का पैसा हो 10,000 रूपए भी... तो वह परिश्रम और होशियारी से अपनी बचत हर साल दूनी कर सकता है।" लोबन के पास पैसा नहीं था लेकिन उसकी अभिलाषा आसमान छूने की थी।

कहानी संग्रह 'नहर में बहती लाशें' में एक मुख्य कहानी 'जलन' है इस कहानी मुख्य स्त्री पात्र शशिबाला है। शशिबाला के माध्यम से कहानीकार ने मध्यवर्ग को दर्शाया है। शशिबाला ने मनहरलाल से शादी की थी। शादी की बाद वह पति के साथ शहर से कुछ दूरी पर रहती थी। शशिबाला और मनहर के दो पुत्र थे। बड़ा सुमन और छोटा रघु। सुमन बडा हो गया था जो अब पिता के काम में हाथ बटाता था एवं रघु स्कूल में पढता था। शशिबाला की एक बहन थी। मनहरलाल का भी एक भाई था। शशिबाला की बहन का नाम रजनीबाला एवं मनहर लाल के भाई का नाम मदनलाल था। शशिबाला की बहन रजनीबाला तथा मनहरलाल के भाई मदनलाल का विवाह होने के बाद उन लोगों ने भी गाँव छोड दिया। रजनीबाला तथा मदनलाल भी शशिबाला, मनहरलाल के पास आकर रहने लगे। उनके भी दो पुत्र उत्पन्न हुए। कुछ दिन अच्छे से एक परिवार के तरह रहे। मनहर लाल बहुत परिश्रमी था जो दूध, छेना बेचने का काम करता था। इसलिए लोग मनहरलाल को यादव के नाम से भी जानते थे। बाद में उसने एक किराये की दुकान ले ली। उसके परिश्रम और अच्छे व्यवहार के कारण उसका व्यापार अच्छा चल रहा था। मदनलाल दूसरे काम कर रहा था। उसके परिश्रमी न होने से उसके व्यापार में हानी होने लगी। जिसके कारण वह अपने परिवार को लेकर शहर चला गया। उसके बड़े बेटे का नाम सम्राट था। जब मदनलाल का परिवार शहर चला गया तो शशिबाला की तबियत खराब रहने लगी। तबियत खराब होने की खबर सुनकर रजनीबाला का परिवार यादव जी के घर आया। रजनीबाला का परिवार आते ही शशिबाला के परिवार एवं एहसान का गुणगान करने लगा। शशिबाला अपने परिवार का बेहिसब गुणगान सुन कर रजनीबाला को अपने नए घर और व्यापार के बारे में बताने लगी। उसने बताया की दुकान और सप्लाई के काम में बचत इतनी है कि किस्तें आसानी से चुक जाती हैं, क्योंकि मार्जिन खूब है...। बार-बार कहती 'इम्बैसी अच्छे मार्जिन पर हर तरह का विदेशी सामान मिल जाता है। पूरी बाते सुनकर रजनीबाला वहाँ से उठकर चली जाती है परंतु अपनी बहन शशिबाला का सुख और चैन अपने साथ ले जाती है और बदले में शशिबाला के लिए छोड गई अशांत भ्रमों के जाल और भयानक दर्द के साथ जलन को, छाया की तरह रहती है।

शशिबाला ने यादव जी से कहा- "तुम अपना काम बदलो यादव जी, मुफ्तखोरी का फायदा उठाओ तीन का तेरह कर। ऐसा काम लो जहाँ ससुरी इम्बैसी से वास्ता पडे और मार्जिन अच्छा हो।" इससे स्पष्ट होता कि शशिबाला मुनाफा के लिए मान-सम्मान खो बैठती है। वह यादव जी को गलत रास्ते पर जाने को कहती है।

****

संदर्भ:-

1. राजू शर्मा- नहर में बहती लाशें, पृ.सं. – 23.
2. राजू शर्मा- नहर में बहती लाशें, पृ.सं. – 49.
3. राजू शर्मा- नहर में बहती लाशें, जलन, पृ.सं. – 91.